International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(5): 174-177

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(5): 174-177
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-08-2025
Accepted: 19-09-2025

सुमन कुमारी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी यूनिवर्सिटी कटराथल, सीकर, राजस्थान, भारत।

डॉ. संतोष कुमार सौरठा
शोध निर्देशक, संस्कृत विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी यूनिवर्सिटी कटराथल, सीकर, राजस्थान, भारत।

Corresponding Author:
सुमन कुमारी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी यूनिवर्सिटी कटराथल, सीकर, राजस्थान, भारत।

महाकवि भवभूति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सुमन कुमारी, संतोष कुमार सौरठा

DOI: https://www.doi.org/10.22271/23947519.2025.v11.i5c.2815

सारांश
महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के महानतम नाटककारों और कवियों में से एक हैं, जिन्हें कालिदास के समकक्ष स्थान प्राप्त है। इस शोध का उद्देश्य भवभूति के व्यक्तित्व, वंश, जन्मस्थान, साहित्यिक योगदान, और उनकी रचनाओं के दार्शनिक एवं काव्यात्मक पक्ष का विश्लेषण करना है। अध्ययन की पद्धति मुख्यतः साहित्यिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों, टीकाओं, और आधुनिक विद्वानों के मतों के माध्यम से भवभूति के जीवनवृत्त और कृतित्व का पुनर्मूल्यांकन किया गया है। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हुआ कि भवभूति विदर्भ क्षेत्र के पद्मपुर के निवासी थे और काश्यप गोत्र के वैदिक ब्राह्मण परिवार से संबंध रखते थे। उन्होंने तीन प्रमुख नाटक-महावीरचरितम्, मालतीमाधवम्, और उत्तररामचरितम् की रचना की, जिनमें दार्शनिक गंभीरता, करुण रस की उत्कृष्टता, तथा मानवीय संवेदना का अद्भुत समन्वय देखा जाता है। उनके नाटकों से यह भी सिद्ध होता है कि वे व्याकरण, मीमांसा और न्याय के प्रकांड ज्ञाता थे। भवभूति की भाषा सशक्त, गंभीर और भावगर्भित है, जो उन्हें अन्य संस्कृत नाटककारों से अलग पहचान देती है। निष्कर्षतः, भवभूति का साहित्य केवल काव्य नहीं बल्कि दर्शन, नीति और भावनाओं का संतुलित समन्वय है। उनके कृतित्व का अध्ययन आज भी नाट्यकला, दर्शन और काव्यशास्त्र के क्षेत्र में प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

शब्द-कुंजी : भवभूति, संस्कृत नाटक, महावीरचरितम्, मालतीमाधवम्, उत्तररामचरितम्, संस्कृत साहित्य, नाट्यकला, दार्शनिक दृष्टिकोण

प्रस्तावना
महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के कालजयी कवियों और नाटककारों में अग्रगण्य हैं, इस तथ्य में लेशमात्र भी संशय नहीं है। संस्कृत साहित्य के संसार में उन्हें श्रेष्ठतम नाटककार का स्थान प्राप्त है। लौकिक संस्कृत साहित्य में भवभूति एकमात्र ऐसे नाटककार एवं कवि हैं, जिन्हें महाकवि कालिदास के समकक्ष गौरव प्राप्त हुआ है। पांडित्य और प्रतिभा के धनी भवभूति ने अपने विस्तृत ज्ञान, रचना-शैली की प्रौढ़ता, सहज अभिव्यक्ति और उदात्त गुणों के कारण संस्कृत साहित्य जगत में अभूतपूर्व प्रसिद्धि अर्जित की। वह रससिद्ध कवि कहलाए। उनके नाटकों का अध्ययन स्पष्ट करता है कि भवभूति को अपनी वाणी पर पूर्ण स्वामित्व प्राप्त था, जैसा कि यह श्लोक प्रमाणित करता है:

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते। उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्षयते।।'
संस्कृत साहित्य में कालिदास के उपरांत श्रेष्ठ नाटककार के रूप में भवभूति का ही नाम सर्वोपरि लिया जाता है। सामान्यतः संस्कृत के प्राचीन महाकवियों और नाटककारों के विषय में पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री और विस्तृत विवरण का अभाव मिलता है। इस संदर्भ में, यह संभव है कि महाकवि बाणभट्ट के बाद भवभूति ही दूसरे ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कृतियों में अपना परिचय स्वयं दिया है।

महाकवि भवभूति: जन्मस्थान पर विद्वानों के मत
महाकवि भवभूति के जीवन और काल को लेकर भारतीय और पश्चिमी विद्वानों में व्यापक सहमति है। उनके बारे में विस्तृत जानकारी उनके तीन नाटकों महावीरचरितम्, मालतीमाधवम्, और उत्तररामचरितम् की प्रस्तावनाओं से मिलती है।
इनमें, महावीरचरितम् की प्रस्तावना सबसे अधिक विवरण देती है, जबकि अन्य दो में कम। इस विवरण से पता चलता है कि भवभूति के पूर्वज दक्षिणापथ (दक्षिण भारत) में, विदर्भ (बरार) क्षेत्र के पद्मपुर नामक नगर के निवासी थे। मालतीमाधवम् की प्रस्तावना भी कुछ ऐसा ही परिचय देती है।

पद्मपुर की स्थिति और विवाद

मूल जानकारी से यह स्पष्ट है कि भवभूति का जन्म विदर्भ प्रांत के पद्मपुर नगर में हुआ था, लेकिन दक्षिणापथ का विशाल क्षेत्र होने के कारण इस पद्मपुर की वास्तविक स्थिति निश्चित करना एक चुनौती रही है।

जगद्धर नामक टीकाकार ने मालतीमाधवम् की टीका में पद्मपुर का अर्थ बदलकर पद्मावती कर दिया। चूंकि पद्मावती मालती की जन्मभूमि थी, इसलिए इस पर बहस शुरू हो गई।

- **उत्तरी मत (पद्मावती/नरवर):** जनरल कनिंघम ने मालतीमाधवम् के नौवें अंक के वर्णन के आधार पर मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित नरवर को पद्मावती का आधुनिक नाम माना। एम.वी. गर्दे ने इसमें संशोधन करते हुए नरवर के पास पद्मपवाया (डबरा से 12 मील) को पद्मावती का परिवर्तित रूप बताया। माधव व्यंकटेश लेले ने भी इसी मत का समर्थन किया कि पद्मावती ही भवभूति का जन्मस्थान है, लेकिन यह तभी मान्य होगा जब पद्मपुर और पद्मावती को एक ही मान लिया जाए, जिसे आवश्यक नहीं माना जाता। एक तर्क यह भी है कि यदि भवभूति ने पद्मावती, वहाँ के पहाड़ों, नदियों और वनों का सूक्ष्म वर्णन किया है, तो शायद उन्होंने वह जगह देखी होगी या कुछ समय वहाँ रहे होंगे। डॉ. बेल्वल्कर का मानना है कि भवभूति स्वयं माधव के रूप में विद्याध्ययन के लिए पद्मावती गए होंगे।
- **दक्षिणी मत (विदर्भ का पद्मपुर):** संस्कृत पाठ से यह स्पष्ट है कि पद्मपुर दक्षिणापथ में था, और नर्मदा के उत्तर के क्षेत्र को दक्षिणापथ मानना तार्किक रूप से सही नहीं लगता।

मिराशी और भण्डारकर का मत

डॉ. भण्डारकर का मत था कि नागपुर के पास चाँदा (चंद्रपुर) जिले का पद्मपुर गाँव ही भवभूति की जन्मभूमि है, क्योंकि यहाँ अब भी तैत्तिरीय शाखा के ब्राह्मण परिवार रहते हैं।

डॉ. वासुदेव विष्णु मिराशी ने इस मत का खंडन किया, यह तर्क देते हुए कि (1) चाँदपुर नाम में भिन्नता है, (2) यह एक नया बसा हुआ गाँव है, और (3) इसकी प्राचीनता सिद्ध करने वाले कोई अवशेष नहीं हैं।

डॉ. मिराशी का अपना मत है कि भवभूति का जन्मस्थान भंडारा जिले में आमगाँव स्टेशन से पूर्व में स्थित पद्मपुर है। यह प्राचीन काल में वाकाटक राजाओं की राजधानी थी, जहाँ आज भी प्राचीन अवशेष मिल रहे हैं, और इसके आस-पास के घने जंगल भवभूति के नाटकों में वर्णित जंगलों जैसे ही हैं।

अतः निष्कर्ष यही निकलता है कि विदर्भ क्षेत्र के पद्मपुर को ही भवभूति की जन्मभूमि मानना सर्वाधिक उचित है। यह भी स्पष्ट है कि भवभूति को दंडकारण्य और गोदावरी नदी का क्षेत्र अत्यंत प्रिय था, जिसका उन्होंने व्यापक भ्रमण किया। हालांकि उन्होंने कई स्थानों का वर्णन किया, पर पद्मावती का वर्णन सबसे सूक्ष्म और विस्तृत है।

महाकवि भवभूति: वंश और पहचान

महाकवि भवभूति ने अपने नाटक मालतीमाधवम् की प्रस्तावना में अपने कुल का विस्तृत परिचय दिया है। उनके पूर्वज काश्यप गोत्र के ब्राह्मण थे। ये ऐसे प्रतिष्ठित ब्राह्मण थे जिनकी उपस्थिति मात्र से ब्राह्मणभोज की पूरी पंक्ति पवित्र हो जाती थी। वे पंचामि (पाँच अग्नियों) का विधिवत आधान करते थे, चान्द्रायण जैसे कठिन व्रतों का पालन करते थे, और सोमयज्ञ करके सोमरस का पान करते थे। वे ब्रह्मवादी थे और ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देने में निपुण थे।

भवभूति द्वारा अपने पूर्वजों की प्रशंसा में प्रयुक्त विशेषणों से स्पष्ट है कि उनका वंश और परिवार वैदिक आचार-विचार, यज्ञ, जाप और ब्रह्मविद्या के अध्ययन-अध्यापन का केंद्र था। उनका पारिवारिक नाम उदुम्बर था। उनके लिए धन की आवश्यकता केवल यज्ञादि सत्कर्मों या परोपकार के लिए ही थी। वे संतान प्राप्ति की इच्छा से विवाह करते थे और तपस्या की भावना से ही अपनी आयु का सम्मान करते थे।

भवभूति से पाँच पीढ़ी पहले महाकवि नामक एक प्रसिद्ध महात्मा हुए थे, जिन्होंने वाजपेय यज्ञ किया था। भवभूति के दादा का नाम भट्टगोपाल और पिता का नाम नीलकण्ठ था, जबकि उनकी माता जतुकर्णी थीं। स्वयं भवभूति श्रीकण्ठ की उपाधि से विभूषित थे। वे व्याकरण, मीमांसा और न्याय के प्रकांड ज्ञाता थे।

भवभूति या श्रीकण्ठ: नाम को लेकर मतभेद

महाकवि ने अपने तीनों नाटकों की प्रस्तावना में 'श्रीकण्ठपदलाञ्छनः भवभूतिर्नाम'का प्रयोग किया है, जिससे यह पता चलता है कि उनका नाम भवभूति था और वे श्रीकण्ठ नाम से भी जाने जाते थे। हालाँकि, कुछ विद्वान मानते हैं कि उनका वास्तविक नाम भवभूति नहीं था। उनका तर्क है कि चूंकि उनके पिता का नाम नीलकण्ठ था, इसलिए पुत्र का नाम श्रीकण्ठ होना स्वाभाविक है। लेकिन यह तर्क युक्तिसंगत नहीं लगता, क्योंकि नीलकण्ठ के पिता का नाम गोपाल था, गोकण्ठ नहीं।

'भवभूति' एक उपाधि?

कुछ प्राचीन टीकाकारों ने यह कल्पना की कि भवभूति कवि की उपाधि थी। उन्होंने यह धारणा उन दो श्लोकों के आधार पर बनाई जो भवभूति के तीनों नाटकों में उपलब्ध नहीं हैं। महावीरचरितम् की टीका में वीरराघव लिखते हैं कि कवि का नाम उनके पिता द्वारा श्रीकण्ठ रखा गया था। उनका मानना है कि राजा ने 'साम्बा पुनातु भवभूति पवित्रमूर्तिः'की रचना से प्रसन्न होकर उन्हें भवभूति की उपाधि दी थी। हालाँकि, वीरराघव ने न तो राजा का नाम बताया है और न ही उनकी राजधानी का उल्लेख किया है।

अनन्तपण्डित आर्यासप्तशती की टीका में एक श्लोक उद्धृत करते हैं: 'तपस्वी का गतोऽवस्थामिति स्मेराननाविव। गिरिजायाः कुचे वन्दे भवभूतिसितानौ।।'उनका मत है कि इसी श्लोक के कारण कवि को भवभूति की उपाधि मिली थी। मालतीमाधवम् के टीकाकार जगद्दर का भी यही मानना है।

दूसरी ओर, मालतीमाधवम् के एक अन्य टीकाकार त्रिपुरारि कहते हैं कि भवभूति उनका प्रचलित नाम (व्यवहार) था और यह उनका ही दूसरा नाम था।

उत्तररामचरितम् की टीका में पंडित शेषराज शास्त्री प्राचीन टीकाकारों के मतों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि भवभूति एक उपाधि थी, ठीक वैसे ही जैसे कालिदास के लिए 'दीपशिखा', भारवि के लिए 'आतपत्र' और माघ के लिए 'घंटा' का प्रयोग किया जाता है।

किन्तु, इन चार उदाहरणों में से, कालिदास, भारवि और माघ की उपाधियों का प्रयोग उनके नाम के स्थान पर नहीं किया जाता। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि कुछ विद्वानों ने भवभूति का वास्तविक नाम क्यों भुला दिया और केवल उनकी उपाधि का ही प्रयोग क्यों करने लगे।

कवि भवभूति और उनके विभिन्न नाम: विद्वानों के मत

महान नाटककार भवभूति और प्रसिद्ध मीमांसक उम्बेक एक ही व्यक्ति थे या अलग-अलग, इस विषय पर विद्वानों में गहरा मतभेद है। यह एक जटिल साहित्यिक पहेली है। कई विद्वानों का मत है कि ये दोनों नाम एक ही प्रतिभाशाली व्यक्ति के हैं:

शङ्कर पाण्डुरङ्ग पण्डित ने गउडवहो की भूमिका में इस एकता का समर्थन किया है। उनके अनुसार, मालतीमाधवम् की एक पुरानी प्रति के तीसरे और छठे अंक की पुष्पिका (अंतिम श्लोक या सूचना) यह सिद्ध करती है कि भवभूति ही उम्बेकाचार्य थे।

माधव व्यङ्कटेश लेले, चित्सुखाचार्य, और डॉ. पी. वी. काणे ने भी इस मत का समर्थन किया है। वित्सुखी के व्याख्याकार प्रत्यग्रूप भगवान् ने अपनी नयनप्रसादिनी टीका में स्पष्ट रूप से "भवभूतिरुम्बेकः" कहकर दोनों नामों को एक ही व्यक्ति का बताया है। वाचस्पति गैरोला इस एकता को जीवन के विभिन्न चरणों से जोड़ते हैं। उनके अनुसार, श्रीकण्ठभट्ट बचपन का नाम था, भवभूति कवि जीवन की पहचान बने, और उम्बेक वृद्धावस्था का प्रतीक।

भवभूति और सुरेश्वराचार्य: एक व्यापक दृष्टिकोण

आचार्य बलदेव उपाध्याय एक कदम आगे बढ़ते हैं और इस व्यक्ति की पहचान को और व्यापक बनाते हैं: उन्होंने माना है कि जिस विद्वान ने नाटकों में अपना नाम भवभूति रखा, उसी ने मीमांसा शास्त्र के ग्रंथों में उम्बेक नाम का उपयोग किया।

यही विद्वान बाद में भगवान् शङ्कराचार्य से अद्वैत मत में दीक्षित हुए और सुरेश्वराचार्य के नाम से विख्यात हुए। इस दृष्टिकोण को बल मिलता है क्योंकि डॉ. पी. वी. काणे पहले ही विश्वरूप और सुरेश्वर की अभिन्नता प्रमाणित कर चुके हैं।

असहमति और निष्कर्ष

हालांकि, सभी विद्वान इस एकता से सहमत नहीं हैं:
डॉ. भण्डारकर को भवभूति और उम्बेक की अभिन्नता में संदेह है।

डॉ. वी. वी. मिराशी और डॉ. अयोध्या प्रसाद सिंह इन दोनों नामों को अलग-अलग व्यक्तियों का मानते हैं। डॉ. गङ्गासागर राय एक संतुलित राय प्रस्तुत करते हैं: "वर्तमान स्थिति में हम इतना ही कह सकते हैं कि भवभूति तथा उम्बेक एक ही व्यक्ति थे, पर सुरेश्वर और विश्वरूप के साथ भवभूति की एकता अभी निश्चित नहीं है।

साहित्यिक प्रमाण

इस बहस में सबसे मज़बूत प्रमाण भवभूति के अपने नाटक हैं। उन्होंने अपने तीनों नाटकों की प्रस्तावना में स्वयं को 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' कहा है। 'प्रमाणज्ञ' का अर्थ मीमांसा दर्शन का ज्ञाता होता है, जो यह स्पष्ट करता है कि नाटककार भवभूति मीमांसा के गहरे विद्वान थे, जिससे प्रसिद्ध मीमांसक उम्बेक के साथ उनकी एकता सिद्ध होती है।

भवभूति का समय

महाकवि भवभूति के काल के विषय मे कुछ तथ्य ज्ञात है जिनके आधार पर उनकी पूर्व और पर सीमा सरलता से निर्धारित की जा सकती है। बाणभट्ट ने हर्षचरितम् के प्रारम्भ मे अपने पूर्ववर्ती प्रसिद्ध कवियो, नाटककारो और लेखको का उल्लेख किया है परन्तु भवभूति का नाम नहीं लिया है, भवभूति यदि उनसे पूर्ववर्ती होते तो इतने बडे नाटककार का नाम नहीं छोड़ सकते थे, इससे यह बात स्पष्ट होती है कि भवभूति, बाण से परवर्ती है। बाणभट्ट हर्ष के आश्रित कवि थे। हर्ष का राज्याभिषेक ६०६ ई० तथा उसकी मृत्यु ६४८ ई० में हुई थी। अत बाणभट्ट का समय ७वी शदी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। इस प्रकार भवभूति का समय ६५० ई० के बाद ही माना जा सकता है क्योकि भवभूति ने कहीं-कहीं पर अपनी कृतियो में बाण की भाषा को आदर्श मानकर उसका अनुकरण किया है। मालतीमाधवम् के नवम व दशम अङ्कों मे कादम्बरी का भाव दृष्टिगोचर होता है।कल्हण के अनुसार भवभूति कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा यशोवर्मा के आश्रित कवि थे।' यशोवर्मा को कश्मीर नरेश ललितादित्य ने पराजित किया था। राजतरंगिणी के अनुसार ललितादित्य का शासनकाल ६९३ से ७३६ ई० था। यशोवर्मा के राजकवि वापतिराज ने प्राकृत काव्य गउडवहो मे एक सूर्यग्रहण का वर्णन किया है जिसके दूसरे दिन ललितादित्य द्वारा यशोवर्मा पराजित किए गये थे। डॉ० याकोबी के गणना के अनुसार इस सूर्यग्रहण की दोनों तिथि १४ अगस्त ७३५ ई० है। उस समय भवभूति व वाक्पतिराज दोनो ही यशोवर्मा के आश्रय मे थे। वावपतिराज ने भवभूति के सम्बन्ध में प्रशस्य पद लिखा है –

'भवभूङ्गजलहिणिग्गय कव्वामय-रसकणा इव फुरन्ति।
जस्स विसेसा अज्जवि वियडेसु कहाणिवेसेसु॥ गउडगहो, पद्य ७९९
इसका सस्कृत रूपान्तर इस प्रकार है-
भवभूति जलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति।
यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु।।

अर्थात् भवभूति के विकट कथा-प्रबन्धो में कुछ विशेष बाते आज भी इस प्रकार चमक रही हैं, जैसे भवभूति रूपी समुद्र से निकले हुए काव्यरूपी अमृत रस के कण हो। इससे यह सिद्ध होता है कि गउड हो की रचना से पूर्व भवभूति अपनी कृतियों का निर्माण कर चुके थे, सूर्यग्रहण के वर्णन से यह निश्चित हो जाता है कि गउडवहो की रचना ७३३ ई० के पश्चात् हुई है और उससे पूर्व भवभूति अपने नाटक लिख चुके थे। वामन (८वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध) ने अपने काव्यालङ्कारसूत्र मे भवभूति के पद्यों को उद्धृत किया है। धनञ्जय ने दशरूपकम् में उदाहरण के रूप में अनेक पद्य भवभूति के तीनो नाटकों से लिए है। धनञ्जय का समय १० वी शताब्दी है, ११०० ई० के लगभग आचार्य मम्मट ने भी अपने काव्यप्रकाश मे भवभूति के पद्य उद्धृत किये है। राजशेखर (८८०-९२०) ने बालरामायण में एक श्लोक दिया है और उसमे कहा है कि पहले वाल्मीकि कवि हुए, तत्पश्चात् वही भर्तुमेण्ठ हुए, वही भवभूति हुए और अब वही राजशेखर है। इस प्रकार राजशेखर ने अपने आप को भवभूति का अवतार बताया है।

बभूव वल्मीकिभवः पुरा कविस्ततः प्रपेदे भुवि भर्तुमेण्ठताम्।
स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखया, स वर्तते संप्रति राजशेखरः॥

भवभूति राजशेखर से पूर्व हुए यह तो निश्चित ही है, किन्तु इस श्लोक से यह भी सिद्ध हो जाता है कि राजशेखर के समय भवभूति इतने प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हो चुके थे कि राजशेखर ने स्वय को उनका अवतार घोषित करने मे गौरव का अनुभव किया है। राजशेखर का समय १०वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

भवभूति की रचनायें

अभी तक उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भवभूति की तीन कृतियों है महावीरचरितम् मालतीमाधवम् और उत्तररामचरितम्। महावीरचरितम् तथा उत्तररामचरितम् सात-सात अङ्को के नाटक है जबकि मालतीमाधवम् प्रकरण है जिसमें दस अङ्क है। मालतीमाधवम् में मालती और माधव नामक दो प्रेमियो की कथा निबद्ध है तथा महावीरचरितम् में राम के प्रारम्भिक जीवन से लेकर उनके राज्याभिषेक तक की कथा चित्रित की गई है। इसी प्रकार उत्तररामचरितम् मे राम के राज्याभिषेक के बाद से सीता-निर्वासन तक की घटना का वर्णन है।
भवभूति और उम्बेक को एक मानने पर उनके अन्य दो दार्शनिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। १.कुमारिलभट्ट के श्लोकवार्तिक की तात्पर्य टीका २. मण्डन मिश्र के भावनाविवेक की टीका। इसके अतिरिक्त जिन-जिन सुभाषित संग्रहों में भवभूति के उद्धरण प्राप्त होते है वे निम्नवत् है –

शार्ङ्गधरपद्धति
श्रीधरदासकृत सदुक्तिकर्णामृत
जल्हणकृत सूक्तिमुक्तावली
गदाधरकृत रसिकजीवन
सुभाषितावली
कवीन्द्रवचनसमुच्चय
इसी प्रकार निम्न अलङ्कार-ग्रन्थों में भी भवभूति के उद्धरण प्राप्त होते हैं -
१ काव्यप्रकाश २. दशरूपकम् ३ साहित्यदर्पण ४
सरस्वतीकण्ठाभरण
रसगङ्गाधर
काव्यालङ्कारवृत्ति ७. अलङ्कारसर्वस्व ८. काव्यानुशासन आदि।

इन सुभाषित ग्रन्थो में भवभूति के कुछ ऐसे पद्य सग्रहीत है जो उनके तीनो नाटको मे नहीं पाये जाते।' यद्यपि इन पद्यो की सख्या अधिक नहीं है फिर भी वर्ण्य-विषय मे विभिन्नता होने के कारण उनका वर्गीकरण किया जा सकता है। उन सभी पद्यों को एक श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। गदाधरकृत रसिकजीवन तथा शार्ङ्गधरपद्धति में सग्रहीत कुछ पद्य तो सुभाषित के उदाहरण है जब कि कुछ अन्योक्ति के।

'किं चन्द्रमा प्रत्युपकारलिप्सया करोति गोत्रिः कुमुदावबोधनम्।
स्वभाव एवोन्नतचेतसां सतां परोपकारव्यसनं हि जीवितम्।।

दैवाद्यदि तुल्योऽभूद् भूतेशस्य परिग्रहः।
तथापि किं कपालानि तुलां यान्ति कलानिधेः॥"

प्रकृतिवर्णन तथा ऋतुवर्णन के भी सुन्दर उदाहरण इन पद्यों में प्राप्य है।

निस्ससार करघातविदीर्णध्वान्तदन्तरुधिरारुणमूर्तिः।
केसरीव कटकादुदयाट्टेरकलीनहरिणो हरिणाङ्कः॥

श्रीधरदासकृत सदुक्तिकर्णामृत मे कुछ ऐसे पद्य मिलते हैं जो शृङ्गार रस से युक्त होने के साथ ही पारिवारिक तथा ग्राम्य जीवन का रमणीय और प्रभावी चित्र अङ्कित कर देते हैं।

लघूनि तृणकुटीरे क्षेत्रकोणे यवानां नवकमलपलाशखस्तरे सोपधाने।
परिहरति सुषुप्तं हालिकद्वन्द्वमारात् स्तनकलशमहोष्माबद्धरेखस्तुषारः।।'

इस प्रकार यदि ये भवभूति के श्लोक है तो ये अत्यन्त उच्चकोटि के उपमेयोपमान योजना से समन्वित है। परन्तु इसके अतिरिक्त भवभूति के कुछ ऐसे भी पद्य प्राप्त होते है जो हमे उनकी लुप्त रचनाओ की कल्पना करने के लिये बाध्य कर देते हैं। सम्भवत सदुक्तिकर्णामृत के इस पद्य द्वारा भवभूति के किसी नाटक का आरम्भ हुआ हो।

'गाढग्रन्थिप्रफुल्लद्दलविफलफणापीठनिर्यद्विषाग्नि-
ज्वालानिष्टप्तचन्द्रद्रवदमृतरसप्रोषित प्रेतभावाः।
उज्जृम्भा वधुनेत्रद्युतिमसक्दसृक्तृष्णयालोकयन्त्यः,
पान्तु त्वां नागनालग्रथितशवशिरः श्रेणयो भैरवस्य।।"

इससे स्पष्ट है कि भवभूति की ये तीन ही मूल कृतियों है। मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् के विषय में विद्वानो में मतभेद है कि इनमे से कौन सी भवभूति की प्रथम नाट्य-कृति है परन्तु इतना अवश्य है कि उत्तररामचरितम् नामक नाटक उनकी अन्तिम कृति है जिसमें उनकी विद्वता का अनूठा परिचय मिलता है।

भवभूति के नाटको की रचना के क्रम के सम्बन्ध मे विद्वानो के भिन्न-भिन्न विचार है। शारदारञ्जन राय के अनुसार मालतीमाधवम् भवभूति की अन्तिम कृति है। उनके अनुसार उत्तररामचरितम् की रचना मालतीमाधवम् से पूर्व की जा चुकी थी जिसका स्पष्टीकरण उन्होने अनेक युक्तियों द्वारा उत्तररामचरितम् मे किया है। इसी मत का समर्थन हरिदास शर्मा सिद्धान्तवागीश ने भी किया है। डॉ० ए० बी० कीथ ने उत्तररामचरितम् को भवभूति की अन्तिम कृति माना है परन्तु प्रथम कृति के विषय में उनका मत अनिश्चित है। वे कहते हैं सम्भवत महावीरचरितम् उनकी प्रथम रचना है परन्तु इसके लिए कोई निश्चित प्रमाण नहीं है और ऐसा कारण भी नहीं है जिससे कि हम कह सके कि यह मालतीमाधवम् से पूर्व की रचना है।' एम० आर० काले के अनुसार मालतीमाधवम् कवि की प्रथम रचना है। महावीरचरितम् द्वितीय तथा उत्तररामचरितम् उनकी अन्तिम रचना है। उन्होने अन्तःसाक्ष्य के आधार पर यही क्रम प्रमाणित किया है। इसके विपरीत टोडरमल, डॉ० भण्डारकर, डॉ० बेल्वरकर आदि विद्वानो ने भवभूति की प्रथम रचना महावीरचरितम् को माना है तत्पश्चात् उन्होंने मालतीमाधवम् की रचना की और अन्त मे उत्तररामचरितम् की। टोडरमल ने उत्तररामचरितम् को इसलिए उनकी अन्तिम कृति माना है क्योकि उसमे कवि ने अपना परिचय बहुत सक्षेप में दिया है। महावीरचरितम् मे आये हुए 'अपूर्वत्वात् प्रबन्धस्य'वाक्य से स्पष्ट है कि कवि ने इससे पहले कोई रचना नहीं की थी। यह नाटक ही उनकी प्रथम कृति है। मालतीमाधवम् के 'अपूर्ववस्तुप्रयोगेण' वाक्य से यह अर्थ लिया जा सकता है कि भवभूति द्वारा उस नाटक में एक नया कथानक प्रस्तुत किया गया है। डॉ० भण्डारकर के अनुसार महावीरचरितम् भवभूति की प्रथम रचना है क्योंकि उनकी भाषा में न तो वैसी अभिव्यञ्जना है और न ही भावचित्र गहनता के प्रति वैसी अन्तर्दृष्टि। उत्तररामचरितम् का यह वाक्य, 'शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतप्रज्ञस्य वाणीमिमाम्'उनकी प्रौढि को स्पष्ट करता है। इसी बात का समर्थन इस पक्ति से भी हो जाता है - उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।'

इस प्रकार इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि भवभूति की ये तीन ही मूल कृतियों है। यद्यपि मालतीमाधवम्, महावीरचरितम् के विषय मे विद्वानो मे मतभेद है कि इनमे से कौन सी भवभूति की प्रथम नाट्य-कृति है, फिर भी समस्त विद्वानो के मतो को देखते हुए ऐसा कहा जा सकता है कि महावीरचरितम् ही कवि की प्रथम रचना है क्योकि कवि ने इस कृति मे अपना विस्तृत परिचय दिया है। मालतीमाधवम् उनकी द्वितीय कृति है क्योंकि इसमे अपेक्षाकृत कम परिचय मिलता है। उत्तररामचरितम् इनकी अन्तिम कृति है जिसमे उनकी विद्वता का अनूठा परिचय तो मिलता ही है साथ-साथ कवि ने अपना परिचय भी अत्यन्त सक्षेप मे दिया है।

संदर्भ सूची

1. 'पद्मनगरं पद्मावती' जगद्धर टीका, पृष्ठ ७।
2. Cunningham-'Archaeological Report for 1962-5 Vol II, P-307-308 A'
3. एम० बी० गर्दे 'Archaeological survey of India'-Report for
4. 1915-1916, P 101-103
5. मालतीमाधवम् सार आणि विचार माधवव्यड्ङ्कटेश, पृष्ठ ५
6. 'नर्मदायाः दक्षिणेन देशो दक्षिणापथः' असे वात्स्यायनकामसूत्राचा टीकाकार
7. यशोधरम्हणतो।'-Dr. VV Mirashi सशोधन मुक्तावालिसर १, पृष्ठ ७७।
8. SK Belvalkar Rama's later History Introduction-P. XXX VII.
9. भण्डारकर 'मालतीमाधव टिप्पणी' खण्ड पृष्ठ ३।
10. 'श्रीकण्ठपदे लाञ्चनं यस्य सः। भवभूतिरिति व्यवहारे तस्येदं नामान्तरम्।' त्रिपुरारि टीका।
11. प्रसिद्धया भवभूत्तिरित्यर्थः।' टीकाकार जगद्धर।
12. भवभूति के नाटक डॉ० बजवल्लभ शर्मा, पृष्ठ ६।
13. मालतीमाधवम् सार आणि विचार एम०वी० लेले, पृष्ठ ८४। १
14. निर्णयसागर, १९१५ पृष्ठ २६५। २ तत्त्वप्रदीपिका
15. भवभूतिरूम्बेकः चित्सुखी की नयनप्रसादिनी टीका, पृष्ठ २६५
16. History of Dharmashastra P. V. Kane Vol 5 P. 1194, 1198
17. भवभूति-वाचस्पति गैरोला, प्रथम सस्करण, १९६३ पृष्ठ-३२२।
18. संस्कृत सुकवि समीक्षा आचार्य बलदेव उपाध्याय-प्रथम सस्करण, १९६३, पृष्ठ
19. History of Dharmashastra-Dr. PV. Kane, Vol.-V, P1198
20. Bhavbhuti Dr. VV Misashı, P. 82-99
21. भवभूति और उनकी नाट्यकला डॉ० अयोध्या प्रसाद सिंह, पृष्ठ ११